*Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)*
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.03

# उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन संबंधी समस्याओं का अध्ययन

03

**डॉ. राजेश कुमार सिंह**
*असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा संकाय विभाग)*
*राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर*

**प्रस्तावना**

मानव समाज में मनुष्य सबसे ज्यादा चिन्तनशील प्राणी है। आस–पास का परिवेश व्यक्ति को सोचने के लिए विवश करता है। मानव विकास की अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे ज्यादा चिन्तनशील अवस्था है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल ने लिखा है कि किशोरावस्था संघर्ष व तूफान की अवस्था है। वर्तमान युग में मानव जीवन जटिल है। प्रतिक्षण व्यक्ति का ध्यान अपने अस्तित्व पर जाता है। सामाजिक जीवन में जब बालक अन्य लोगों के सम्पर्क में आता है तो उनके व्यक्तित्व व व्यवहार से प्रभावित होकर वह स्वयं के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु होता है जैसे मैं कौन हूँ क्या हूँ मेरी भूमिका क्या है मुझमें क्या अच्छाईयाँ हैं, क्या कमियाँ हैं, लोगों की नजर में मेरा स्थान क्या है। यह चिन्तन ही आत्म–सम्प्रत्यय कहलाता है।

अध्ययन संबंधी समस्याएँ ये वे अकादमिक, व्यवहारिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएँ हैं जो सीखने की प्रक्रिया और अध्ययन संबंधी समस्याओं को उत्पन्न करती हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन संबंधी समस्याएँ अत्यन्त आम हैं, लेकिन उन्हें अक्सर गलत समझा जाता है। कई बार इन समस्याओं को छात्र की आलस्य, प्रेरणा की कमी या बौद्धिक अक्षमता का परिणाम मान लिया जाता है। हालांकि एक गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से पता चलता है कि ये समस्याएँ अक्सर मूल कारण नहीं, बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक मुद्दों के लक्षण होती हैं, जो सीधे तौर पर छात्र के आत्मसम्प्रत्यय और समायोजन की स्थिति से जुड़ी होती हैं। **संज्ञानात्मक और व्यवहारिक समस्याएँ–**इनमें ध्यान और एकाग्रता की कमी, अवधारणाओं को समझने या बनाए रखने में कठिनाई, कमजोर याददाश्त और खराब अध्ययन की आदतें (जैसे–लेटकर पढ़ना, समय का प्रबंधन न करना, गृह कार्य न करना) आदि शामिल हैं। **भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ–**इनमें शैक्षिक तनाव, परीक्षा की चिंता, असफलता का तीव्र भय, और सीखने के प्रति अरूचि या उदासीनता षामिल है। ये समस्याएँ अक्सर शारीरिक लक्षणों जैसे सिरदर्द, नींद न आना या पेट की समस्याओं के रूप में भी प्रकट हो सकती हैं। **प्रेरणा संबंधी समस्याएँ–**इसमें लक्ष्यों का अभाव, भविष्य के बारे में अनिश्चितता और पढ़ाई के लिए आंतरिक प्रेरणा की कमी शामिल हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये अध्ययन संबंधी समस्याएँ शून्य में उत्पन्न नहीं होती हैं। वे एक जटिल कारण–कार्य श्रृंखला का अंतिम परिणाम होती हैं।

**1.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के स्तर का अध्ययनः–**

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा चयनित 400 विद्यार्थियों के **अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं** के स्तर का मापन **डॉ. लाजवंती एवं प्रो.एन.पी.एस.चंदेल** कृत **अध्ययन आदत सूची (SHI-WLCNPA)** के माध्यम से किया गया जिससे प्राप्त परिणाम का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया हैः–

**उच्च माध्यमिक स्तर पर 400 विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्या के स्तर का विवरण**

| क्रं0सं0 | श्रेणी | स्तर | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 154-168 | अत्यधिक उच्च | 6 | 1.5% |
| 2. | 139-153 | उच्च | 26 | 6.5% |
| 3. | 124-138 | औसत से उच्च | 108 | 27.0% |
| 4. | 106-123 | औसत | 160 | 40.0% |
| 5. | 91-105 | औसत से नीचे | 80 | 20.0% |
| 6. | 76-90 | निम्न | 18 | 4.5% |
| 7. | 61-75 | अत्यधिक निम्न | 2 | 0.5% |
| | योग | | 400 | 100% |

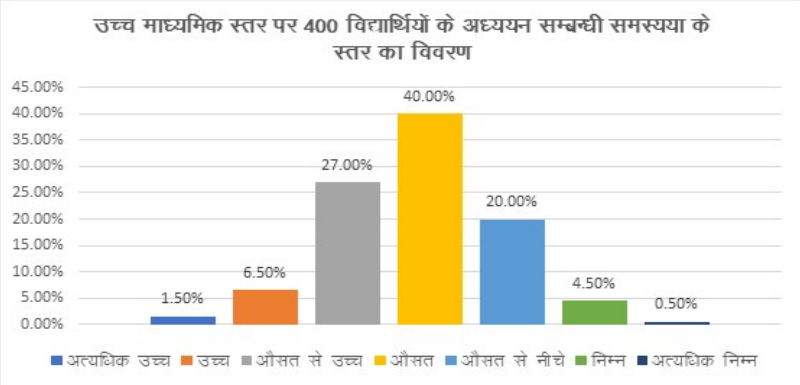


**विश्लेषण एवं व्याख्या–**

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उससे जुड़ी समस्याओं को मापने के लिए डॉ0 लाजवंती एवं प्रो0 एन0पी0एस0 चंदेल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत सूची **(SHI-WLCNPA)** का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों का विश्लेषण तालिका 1.1 में प्रदर्शित किया गया है।

औसत स्तर की बहुलता: तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 160 विद्यार्थी (40 प्रतिशत) औसत श्रेणी में आते हैं। यह दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थयों की पढ़ने की आदतें सामान्य स्तर की हैं।

1. **सकारात्मक पक्ष (अच्छी आदतें):** आंकड़ों के अनुसार, 108 विद्यार्थी (27 प्रतिशत) औसत से उच्च, 26 विद्यार्थी (6.5 प्रतिशत) उच्च और 6 विद्यार्थी (1.5 प्रतिशत) अत्यधिक उच्च श्रेणी में हैं। कुल मिलाकर 35 प्रतिशत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें बेहतर और व्यवस्थित हैं।
2. **नकारात्मक पक्ष (कमजोर आदतें/समस्याएँ)**: दूसरी ओर, 80 विद्यार्थी (20.00 प्रतिशत) औसत से नीचे, 18 विद्यार्थी (4.5 प्रतिशत) निम्न और 2 विद्यार्थी (0.5 प्रतिशत) अत्यधिक निम्न स्तर पर पाए गए। अर्थात कुल 25 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे हैं जिनकी अध्ययन आदतें खराब हैं और वे अध्ययन संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं।

**परिणामों की व्याख्या:**

परिणामों की व्याख्या मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से निम्न प्रकार की जा सकती है: उच्च माध्यमिक स्तर पर 40 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत अध्ययन आदत रखना यह बताता है कि वे परीक्षा और कक्षा कार्य के प्रति सामान्य रूप से जागरूक हैं, लेकिन उनमें उत्कृष्टता के लिए आदतों में सुधार की गुंजाइश है। जिन 35 प्रतिशत विद्यार्थियों का स्तर औसत से ऊपर है, वे विद्यार्थी समय–प्रबंधन, एकाग्रता और नियमितता का पालन करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होने की संभावना अधिक होती है।

चिंताजनक स्थिति उन 25 प्रतिशत विद्यार्थियों की है जो औसत से नीचे की श्रेणी में हैं। अध्ययन आदतों का 'निम्न' होना सीधे तौर पर **अध्ययन संबंधी समस्याओं** को इंगित करता है। इन विद्यार्थियों में एकाग्रता की कमी, टालमटोल की प्रवृत्ति या उचित मार्गदर्शन का अभाव हो सकता है। यह समूह शैक्षिक पिछडेपन के जोखिम क्षेत्र में आता है और इन्हें सुधारात्मक शिक्षण और परामर्श की आवश्यकता है।

**निष्कर्ष:**

समग्र रूप से, न्यायदर्श का वितरण संतुलित है, परन्तु एक–चौथाई (25 प्रतिशत) विद्यार्थियों में खराब अध्ययन आदतों का होना यह संकेत देता है कि विद्यालयों में 'स्टडी स्किल्स' के विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

**1.2 सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के स्तर का अध्ययनः–**

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा चयनित 200 **सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर पर** विद्यार्थियों के **अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं** के स्तर का मापन **डॉ.लाजवंती एवं प्रो.एन.पी.एस.चंदेल** कृत **अध्ययन आदत सूची (SHI-WLCNPA)** के माध्यम से किया गया जिससे प्राप्त परिणाम का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया है:–

**सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर पर 200 विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्या के स्तर का विवरण**

| क्रं0सं0 | श्रेणी | स्तर | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 154-168 | अत्यधिक उच्च | 2 | 1.0 % |
| 2. | 139-153 | उच्च | 11 | 5.5% |
| 3. | 124-138 | औसत से उच्च | 46 | 23.0% |
| 4. | 106-123 | औसत | 79 | 39.5% |
| 5. | 91-105 | औसत से नीचे | 50 | 25.0% |
| 6. | 76-90 | निम्न | 12 | 6.0% |
| 7. | 61-75 | अत्यधिक निम्न | 0 | 0.00% |

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.03

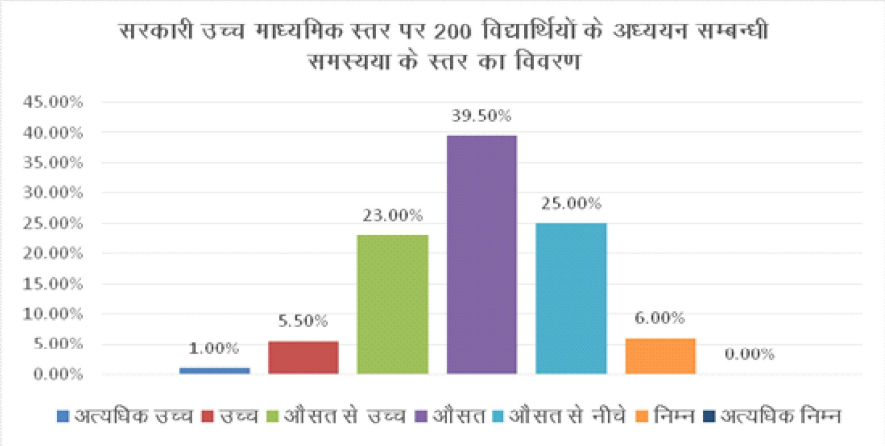


**विश्लेषण एवं व्याख्या–**

प्रस्तुत शोध में सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और समस्याओं का मापन 'अध्ययन आदत सूची' (SHI-WLCNPA) द्वारा किया गया। प्राप्त परिणामों का विश्लेषण तालिका सं0 1.2 में निम्न प्रकार है।

1. **औसत स्तर की प्रधानता:** तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 79 विद्यार्थी (39.5 प्रतिशत) औसत श्रेणी में आते हैं। यह दर्शाता है कि सरकारी स्कूलों के अधिकतर छात्रों की पढ़ने की आदतें सामान्य स्तर की हैं।
2. **नकारात्मक पक्ष (अध्ययन समस्याएँ):** यह एक महत्वपूर्ण और चिंताजनक आंकड़ा है कि 50 विद्यार्थी (25.0 प्रतिशत) औसत से नीचे और 12 विद्यार्थी (6.0 प्रतिशत) निम्न स्तर पर हैं। कुल मिलाकर 31 प्रतिशत सरकारी विद्यार्थी खराब अध्ययन आदतों और समस्याओं से जूझ रहे हैं। (ध्यान दें: अत्यधिक निम्न श्रेणी में कोई छात्र नहीं हैं।)
3. **सकारात्मक पक्ष (अच्छी आदतें):** दूसरी ओर, 46 विद्यार्थी (23.0 प्रतिशत) औसत से उच्च, 11 विद्यार्थी (5.5 प्रतिशत) उच्च और केवल 2 विद्यार्थी (1.0 प्रतिशत) अत्यधिक उच्च श्रेणी में हैं। कुल मिलाकर 29.5 प्रतिशत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें बेहतर पाई गई।

**परिणामों की व्याख्या:**

सरकारी विद्यालयों के संदर्भ में इन परिणामों की व्याख्या विषेश ध्यान देने योग्य है। जहाँ 39.5 प्रतिशत विद्यार्थी औसत श्रेणी में हैं, वहीं 31 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत से नीचे या निम्न श्रेणी में होना यह संकेत देता है कि सरकारी विद्यालयों में छात्रों के पास उचित स्टडी स्किल्स का अभाव है। इसका कारण घर पर पढ़ाई के लिए उचित वातावरण न मिलना, मार्गदर्शन की कमी या शैक्षिक संसाधनों का अभाव हो सकता है। यह 31 प्रतिशत का आंकड़ा (समस्याग्रस्त छात्र) अच्छे छात्रों (29.5 प्रतिशत) की संख्या से अधिक है, जो एक नकारात्मक संकेत है। विशिष्ट रूप से 25 प्रतिशत छात्र जो औसत से नीचे हैं, वे शैक्षिक रूप से पिछड़ने के कगार पर हैं। यदि इनकी अध्ययन आदतों (जैसे– समय सारिणी बनाना, नोट–टेकिंग, रिवीजन) में सुधार नहीं किया गया, तो इनका परीक्षा परिणाम प्रभावित हो सकता है। सकारात्मक पक्ष में 29.5 प्रतिशत विद्यार्थी जो अच्छी आदतों का प्रदर्शन कर रहे हैं वे यह सिद्ध करते हैं कि सीमित संसाधनों के बावजूद व्यक्तिगत लगन और विद्यालयी अनुषासन से अच्छी आदतें विकसित की जा सकती हैं।

**निष्कर्ष:**

सरकारी विद्यालयों में अध्ययन आदतों की स्थिति 'संतोषजनक नहीं' कही जा सकती, क्योंकि एक–तिहाई (31 प्रतिशत) विद्यार्थी अध्ययन संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन विद्यालयों में उपचारात्मक शिक्षण और स्टडी स्किल वर्कशॉप की तत्काल आवश्यकता है।

**1.3 निजी उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के स्तर का अध्ययनः–**

| क्रं0सं0 | श्रेणी | स्तर | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 154-168 | अत्यधिक उच्च | 4 | 2.0% |
| 2. | 139-153 | उच्च | 15 | 7.5% |
| 3. | 124-138 | औसत से उच्च | 62 | 31.0% |
| 4. | 106-123 | औसत/मध्यम | 81 | 40.5% |
| 5. | 91-105 | औसत से नीचे | 30 | 15.0% |
| 6. | 76-90 | निम्न | 6 | 3.0% |
| 7. | 61-75 | अत्यधिक निम्न | 2 | 1.0% |
| | | योग | 200 | 100% |

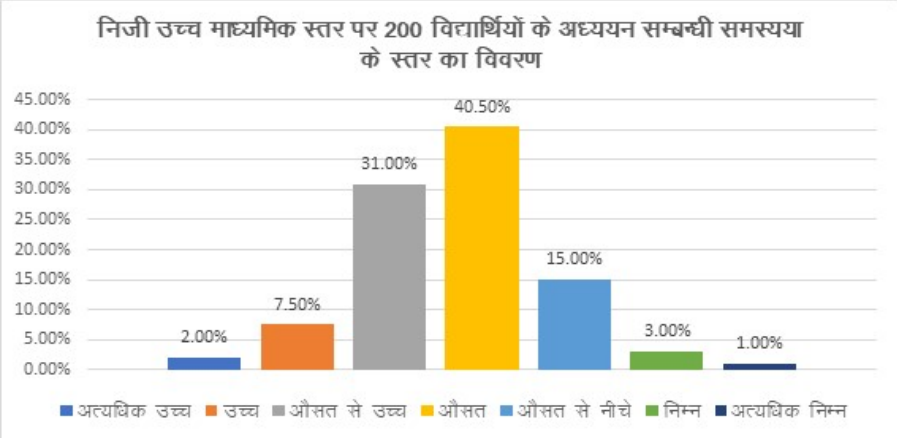


प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा चयनित 200 **निजी उच्च माध्यमिक स्तर पर** विद्यार्थियों के **अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं** के स्तर का मापन **डॉ.लाजवंती एवं प्रो.एन.पी.एस.चंदेल** कृत **अध्ययन आदत सूची (SHI-WLCNPA)** के माध्यम से किया गया जिससे प्राप्त परिणाम का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया है:–

**निजी उच्च माध्यमिक स्तर पर 200 विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्या के स्तर का विवरण**

**विश्लेषण एवं व्याख्या–**

प्रस्तुत शोध में निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और समस्याओं का मापन 'अध्ययन आदत सूची' (SHI-WLCNPA) द्वारा किया गया। प्राप्त परिणामों का विश्लेषण तालिका सं0 1.3 में निम्न प्रकार है।

1. **औसत स्तर की प्रधानता:** तालिका के अनुसार, सर्वाधिक 81 विद्यार्थी (40.5 प्रतिशत) औसत श्रेणी में आते हैं। यह दर्शाता है कि निजी स्कूलों के विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग सामान्य अध्ययन आदतों का पालन करता है।
2. **सकारात्मक पक्ष (उत्तम अध्ययन आदतें):** यह निजी विद्यालयों के लिए एक बहुत ही सकारात्मक परिणाम है कि 62 विद्यार्थी (31.0 प्रतिशत) औसत से उच्च, 15 विद्यार्थी (7.5 प्रतिशत) उच्च और 4 विद्यार्थी (2.0 प्रतिशत) अत्यधिक उच्च श्रेणी में हैं। कुल मिलाकर 40.5 विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें 'अच्छी' या 'उत्कृष्ट' हैं।
3. **नकारात्मक पक्ष (अध्ययन समस्याएँ):** दूसरी ओर, 30 विद्यार्थी (15.0 प्रतिशत) औसत से नीचे और 6 विद्यार्थी (3.0 प्रतिशत) निम्न स्तर पर हैं। अत्यधिक निम्न श्रेणी में कोई भी छात्र नहीं है। कुल मिलाकर 18 प्रतिशत विद्यार्थी अध्ययन संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

**परिणामों की व्याख्या:**

निजी विद्यालयों के संदर्भ में इन परिणामों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: निजी विद्यालयों के 40.5 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत से ऊपर होना यह सिद्ध करता है कि यहाँ के विद्यार्थियों में समय प्रबंधन, एकाग्रता और नियमित अध्ययन की आदतें बेहतर विकसित हैं। इसका श्रेय विद्यालय के अनुशासित वातावरण, शिक्षकों द्वारा नियमित निगरानी और अभिभावकों की जागरूकता को दिया जा सकता है। जहाँ सरकारी स्कूलों में खराब आदतों वाले छात्रों की संख्या 31 प्रतिशत थी, वहीं निजी स्कूलों में यह संख्या घटकर 18 प्रतिशत रह गई। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। इससे पता चलता है कि निजी स्कूलों का ढांचा छात्रों को पढ़ाई के प्रति अधिक प्रेरित करता है। फिर भी 15 प्रतिशत छात्र जो औसत से नीचे हैं, उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। निजी स्कूलों में भी कुछ छात्र ऐसे हैं जो पिछड़ रहे हैं और उन्हें उपचारात्मक सहायता की आवश्यकता है।

**निष्कर्ष:**

निजी विद्यालयों में अध्ययन आदतों की स्थिति संतोषजनक से बेहतर है। यहाँ अच्छे छात्रों (40.5 प्रतिशत) की संख्या कमजोर छात्रों (18 प्रतिशत) से दोगुनी से भी अधिक है, जो शैक्षिक गुणवत्ता का एक सकारात्मक संकेतक है।